प्रेम की ओर . . .

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

प्रेम की ओर . . .

कभी कुछ भी ठीक वैसे ही घटित नहीं होता जिस तरह तुम चाहते हो, तुम वैसा करने का चाहे कितना भी प्रयत्न क्यों न कर लो। यह तो निश्चित ही है कि राह में कहीं न कहीं छोटा-मोटा रोड़ा ज़रूर आड़े आएगा। किसी भी परिस्थिति में चाहे कुछ भी हो, याद रखो : इस ब्रह्माण्ड की हर वस्तु के मूल में एक शक्ति निहित है जो आत्मविश्वास भरी ऊर्जा से झंकृत है। उस बारीक, रेशमी धारा को खोजो और उसके शुद्ध सार के स्पन्दन में बहते रहो।

~ गुरुमाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।